आचार्य ब्रह्मदेवसूरि

जीवन-परिचय : अध्यात्म शैली के टीकाकारों में आचार्य ब्रह्मदेवसूरि का नाम उल्लेखनीय है। ये जैनसिद्धान्त के विद्वान हैं। इन्होंने स्वसमय और परसमय का अच्छा अध्ययन किया है। 'ब्रह्म' उनकी उपाधि भी बतलाई जाती है।

अनेक प्रमाणों के आधार पर आचार्य ब्रह्मदेवसूरि का समय ई. सन् की 12वीं शती सिद्ध होता है।

रचना-परिचय : ब्रह्मदेव के द्वारा लिखित निम्न रचनाएँ मानी जाती हैं—

1. बृहद्द्रव्यसंग्रह की टीका,
2. परमात्मप्रकाश की टीका
3. तत्त्वदीपक
4. ज्ञानदीपक
5. प्रतिष्ठातिलक
6. विवाहपटल
7. कथाकोश

परन्तु इन रचनाओं में से केवल दो रचनाएँ ही उपलब्ध हैं।

1. **बृहद्द्रव्यसंग्रह की टीका :** बृहद्द्रव्यसंग्रह की टीका में अनेक सैद्धान्तिक एवं आध्यात्मिक विषयों का समावेश है। यह टीका आश्रम नगर के मुनिसुव्रत चैत्यालय में लिखी गयी है। यह टीका आगम और अध्यात्म का सुन्दर समन्वय है। इस टीका में अनेक ग्रन्थ और ग्रन्थकारों का भी वर्णन है, जो इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

2. परमात्मप्रकाश वृत्ति : परमात्मप्रकाश की यह टीका भी बृहद्द्रव्यसंग्रह की टीका के समान आध्यात्मिक और विस्तृत है। भावनात्मक ग्रन्थ होने के कारण टीकाकार ने आत्मा, भक्ति, वीतरागता एवं सरागता का विस्तारपूर्वक कथन किया है।